बालविज्ञान प्रस्तुत

प्रार्थना

Telephone to God

प्रार्थना
Telephone to God

- त्रिमंत्र -

नमो वीतरागाय
नमो अरिहंताणं
नमो सिद्धाणं
नमो आयरियाणं
नमो उवज्झायाणं
नमो लोए सव्वसाहूणं
एसो पंच नमुक्कारो, सव्व पावप्पणासणो
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलम् ॥ १ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २ ॥
ॐ नमः शिवाय ॥ ३ ॥
जय सच्चिदानंद

संपादकीय

हर एक बच्चे को छोटी उम्र से ही भगवान को प्रार्थना करने के संस्कार मिलते हैं। 'हे भगवान, मुझे सद्बुद्धि दीजिए, मुझे समझदार बनाना,' यह उसकी सब से पहली प्रार्थना है, जिसे वह माता से सीखता है। और जो वह रोज़ करता है। रोज़ ऐसा करने से उसकी श्रद्धा पक्की होती जाती है कि भगवान प्रार्थना सुनते ही हैं। बात भी सही है। सच्चे दिल से की गई प्रार्थना फल देती ही है।

ऐसा ही अनुभव अपने इस मित्र को हुआ है। उसका नाम है रॉकी रॉय। धीरे-धीरे तो 'गॉड' उसके मित्र बन गए।

क्या अनुभव हुआ?

नहीं, नहीं। मैं नहीं कहूँगा। उसके लिए तो तुम्हें इस पुस्तिका को पढ़नी पड़ेगी।

तो इस नई बात को करो इन्जॉय और बनाओ आप भी भगवान को अपने 'बेस्टफ्रेन्ड'।

जय सच्चिदानंद

प्रकाशक :
महाविदेह फाउन्डेशन
५, ममतापार्क सोसाइटी, नवगुजरात कॉलेज के पीछे,
उस्मानपुरा, अहमदाबाद-३८००१४, गुजरात, भारत.
फोन : (०७९) २७५४०४०८.
E-mail : info@dadabhagwan.org
Website: www.dadabhagwan.org

©: All Rights Reserved – Mahavideh Foundation
Address as above

मुद्रक :
महाविदेह फाउन्डेशन
पार्श्वनाथ चेम्बर्स के बेसमेन्ट में, नयी रिज़र्व बैंक के पास,
इन्कम टैक्स, अहमदाबाद - १४. गुजरात, भारत.
फोन : (०७९) २७५४२९६४.

प्राप्ति स्थान :
त्रिमंदिर, सीमंधर सिटी, अहमदाबाद-कलोल हाईवे, अडालज
जिला : गांधीनगर - ३८२४२१. गुजरात, भारत.
E-mail: balvignan@dadabhagwan.org
Available on online store :
https://store.dadabhagwan.org
Website: kids.dadabhagwan.org
प्रथम आवृति : २,००० कोपी, नवम्बर २०१५
मूल्य : ₹ ४५

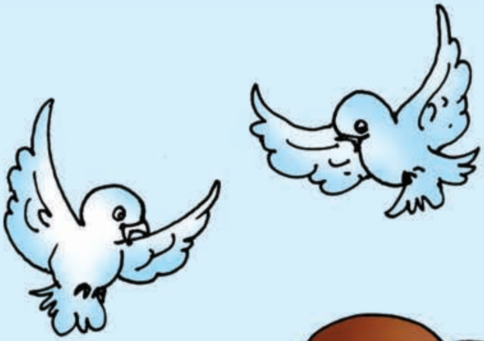

हाय, हेल्लो, हाऊ आर यू?
मैं आपका नया फ्रेन्ड हूँ।
रॉकी रॉय मेरा नाम है,
नए फ्रेन्ड्स बनाना मेरा काम है।

फ्रेन्ड्स तो मेरे काफी हैं,
लेकिन 'गॉड' मेरे बेस्ट फ्रेन्ड हैं।
उनके साथ मैं बातें करता हूँ,
प्रार्थना करके उनसे पूछता हूँ।

वे भी मुझे जवाब देते हैं,
शक्ति मेरी बढ़ा देते हैं!
प्रार्थना कैसे मिली मुझे?
आओ आपको बात बताऊँ पहले से...

मेरे मन में रोज़ प्रश्न उठता कि,
क्यों रोज़ स्कूल में प्रार्थना करते हैं?

जाकर मैंने टीचर से पूछा,
'मैडम, प्रार्थना यानी क्या है?'

टीचर ने कहा, 'हमसे जो न हो पाता हो,
या जिसमें हमें मदद की ज़रूरत हो,

तो भगवान के पास उसे माँगना चाहिए,
भाव से और दिल से कहना चाहिए।

तो भगवान तक यह पहुँच जाता है,
हमें उसका फल भी मिलता है।'

फिर भी मेरी समझ में नहीं आ रहा था,
टीचर ने एक उदाहरण देकर समझाया।

रोज़ सुबह उठकर प्रार्थना करना,
'हे भगवान, मुझसे किसी को दुःख न हो।'

‘मैडम, ऐसी प्रार्थना से क्या होगा?’
‘सच में हमें ऐसी शक्ति मिलेगी’ मैडम ने कहा।

“हम ‘गुड बॉय’ बन जाएँगे,
और सब को अच्छे लगने लगेंगे।”

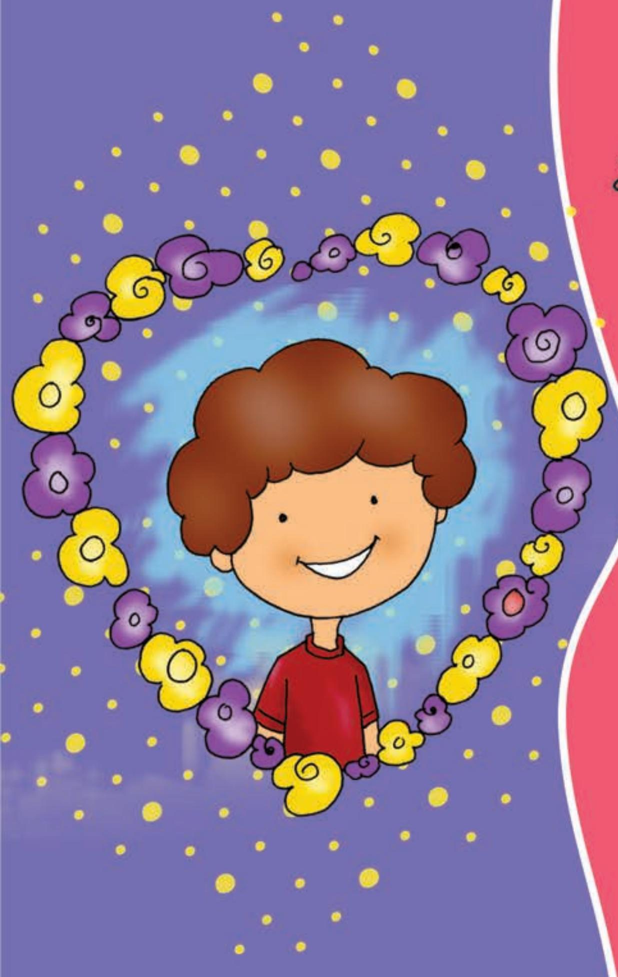

‘प्रार्थना से जो माँगो वह मिलेगा?’ मैंने पूछा,
‘सच्चे भाव से कहेंगे तो अवश्य मिलेगा।’

तब मुझे प्रार्थना का महत्व समझ में आया,
और मैंने प्रार्थना करना शुरू किया।

फिर तो रोज़ मैं प्रार्थना करता,
भगवान के साथ नई-नई बातें करता।

भगवान मुझे अच्छे लगने लगे,
वे मेरे दिल में बसने लगे।

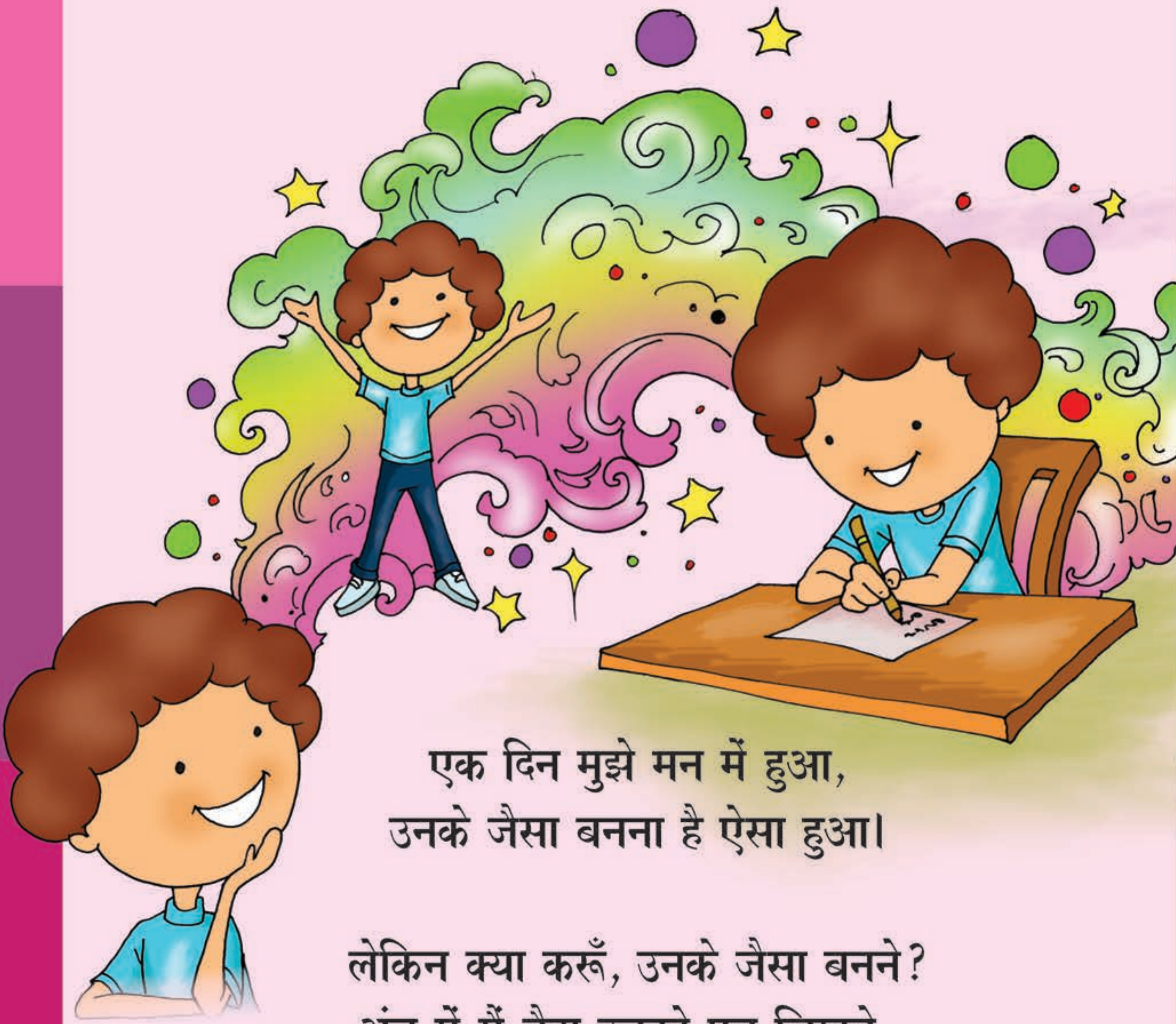

एक दिन मुझे मन में हुआ,
उनके जैसा बनना है ऐसा हुआ।

लेकिन क्या करूँ, उनके जैसा बनने?
अंत में मैं बैठा उनको पत्र लिखने...

प्रिय भगवान,

दादी रोज़ मुझे आपकी कहानी कहती हैं,
इसलिए मुझे आपसे मिलने का मन करता है।

मम्मी कहती हैं,

जैसे फोन पर किसी के साथ बात करके मिलने बराबर लगता है,
वैसे ही प्रार्थना मतलब भगवान को फोन लगाया बराबर है।

पापा कहते हैं,
दिल से की हुई प्रार्थना भगवान तुरंत सुनते हैं,
प्रसन्न होकर वे जल्द ही आशीर्वाद देते हैं।

दादा कहते हैं,
प्रार्थना करने से उनके जैसे बन सकते हैं,
सभी को प्रिय लगें ऐसे बन सकते हैं।

इसलिए हे प्रिय भगवान,
मैं प्रार्थना करता हूँ,
मुझे आपके जैसा ही बनाना,
इतना कहता हूँ।

इतना कहकर,
देखा भगवान के सामने,
भगवान हँस रहे थे देखकर मेरे सामने।
मानो मुझे कह रहे हों,
मैं जैसा कहूँ वैसा करोगे?
मैं प्रसन्न हो जाऊँगा,
अगर तुम सब के साथ प्रेम से रहोगे।

मेरे चेहरे पर भी 'मुस्कान' आई,
उनके जैसा बनने की चाबी मिली।

मेरी खुशी का कोई ठिकाना न रहा,
तब से मैं सब के साथ मिल-जुलकर
रहने लगा...

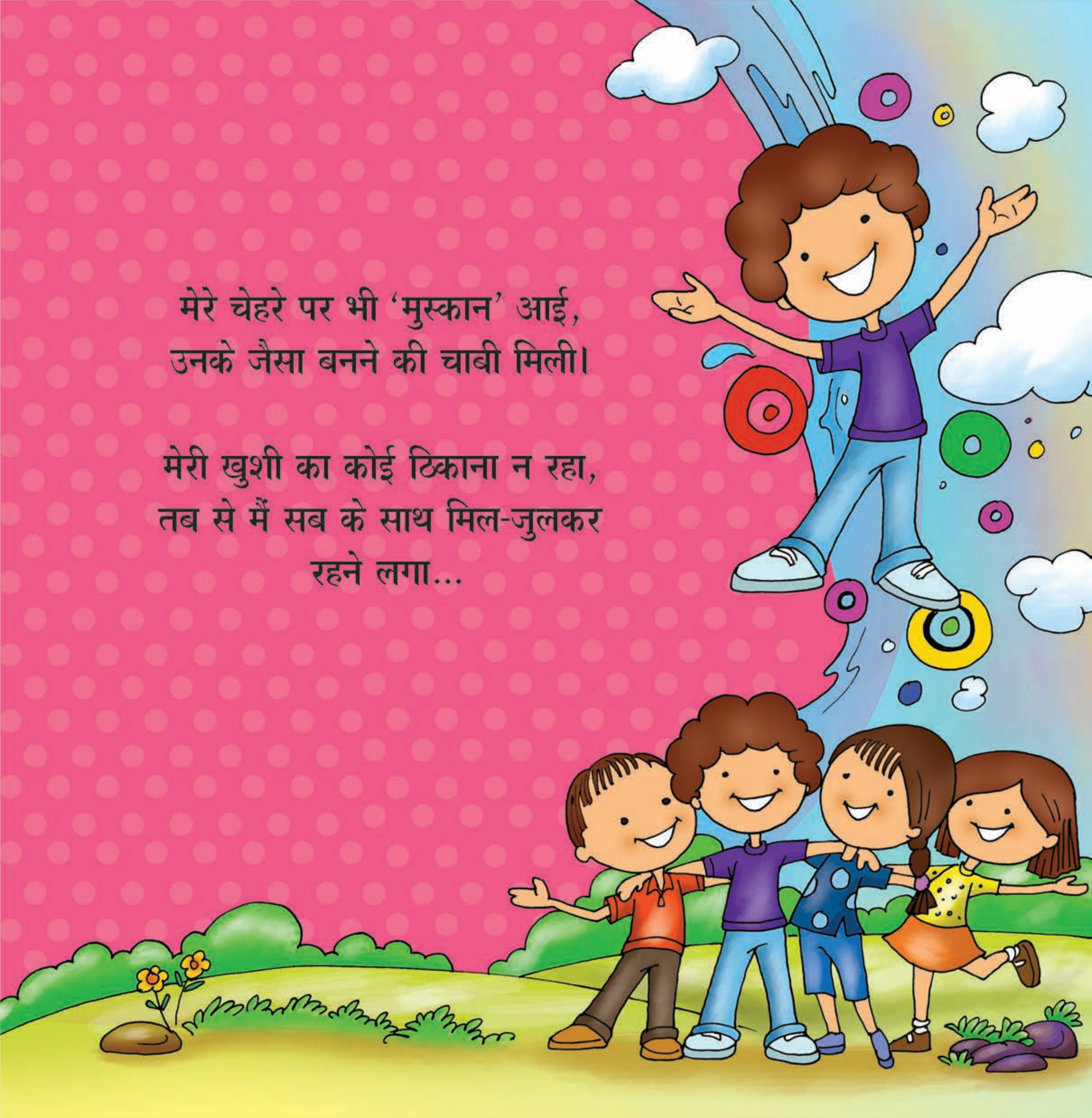

लेकिन मैं बार-बार झूठ बोलता,
और किसी का कुछ भी ले लेता।

कोई मुझे डाँटता तो कोई मुझे मारता,
कोई मम्मी-पापा से शिकायत भी करता।

सब मुझ से नाराज़ रहते,
मम्मी-पापा भी मुझ से ऊब जाते।

मुझे कैसे समझाया जाए, पता न चलता,
अचानक दादी को एक तरीका सूझा।
उन्होंने मुझे अपने पास बुलाया,

प्रेम से सिर पर हाथ घुमाया।
पूछा, 'सब डाँटते हैं, यह अच्छा लगता है तुझे?'
सिर हिलाकर 'मना' किया मैंने।

‘लेकिन मैं क्या करूँ? आप ही मुझे बताओ,’
दादी ने कहा, ‘अब प्रार्थना करो।
भगवान से कहो कि इसमें से छुड़वाए,
सब डाँटे ऐसा नहीं करना है मुझे।
शक्ति दो कि मैं न करूँ ऐसा फिर से,
सब को अच्छा लगूँ, ऐसा बन जाऊँ झट से।’

मैंने कहा, 'दादी, मैं भगवान से कहूँगा,
लेकिन फिर से ऐसा हो जाए तो मैं क्या करूँगा?'

"तो तुरंत भगवान से 'सोरी' कह देना,"
दादी ने कहा, "धीरे-धीरे तू 'गुड बॉय' बन जाएगा।"

दादी की बात मुझे पसंद आ गई,
हलवे की तरह गले से नीचे उतर गई।
बूरी आदत से छूटने के लिए प्रार्थना कर सकते हैं,
आज पता चला कि भगवान से ऐसा भी कह सकते हैं।

उनके कहे अनुसार करना मैंने शुरू कर दिया,
फिर तो जैसे जादू हो गया।

झूठ बोल दूँ या किसी का कुछ ले लूँ,
तो तुरंत मुझे प्रार्थना करना याद आ जाता है।

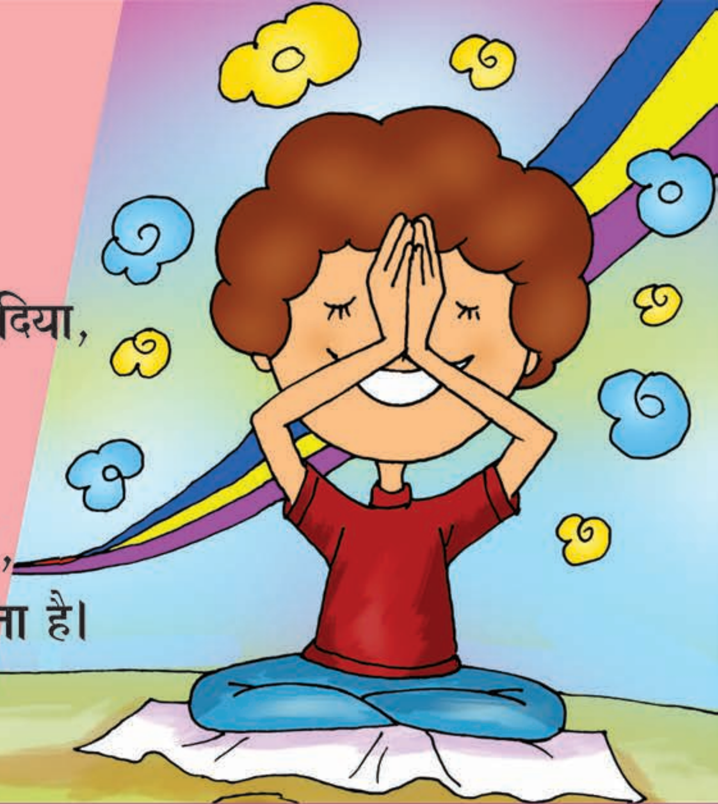

फिर तुरंत मैं सच बोल देता हूँ,
और साथ-साथ 'सोरी' भी कह देता हूँ।

सब मुझे 'गुड बॉय' कहने लगे,
'वाह प्रार्थना..... क्या कहें।'

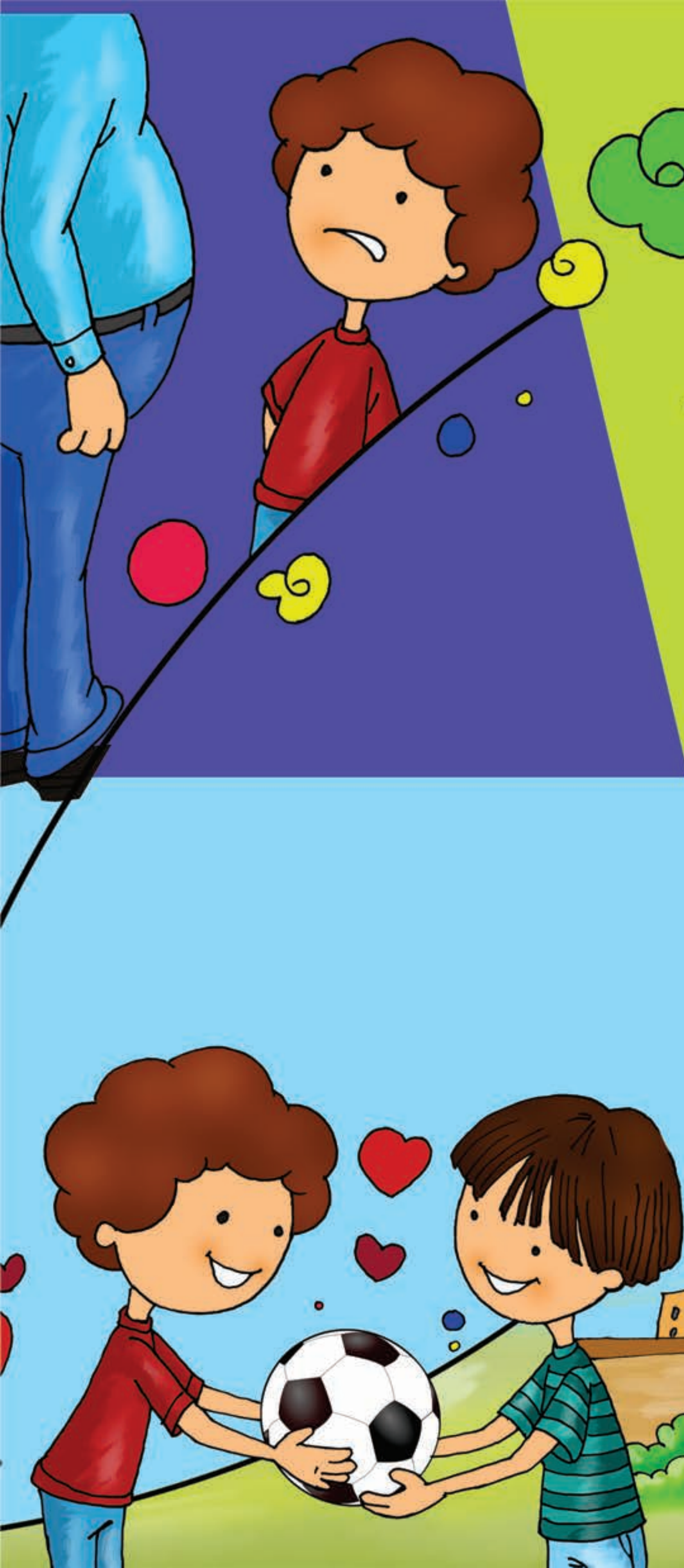

मम्मी को भी यह पसंद आने लगा,
रोज़ वे मुझे सिखाने लगीं नया-नया।

कहतीं, 'सभी की मदद करनी चाहिए
और हमारे पास जो हो वह सभी को देना चाहिए।'

मेरे पास एक रंगीन रबर था,
'मिकी माउस'वाला उसका चेहरा था।

एक दिन जॉनी ने रबर माँगा,
मैंने उसे देने से मना किया।

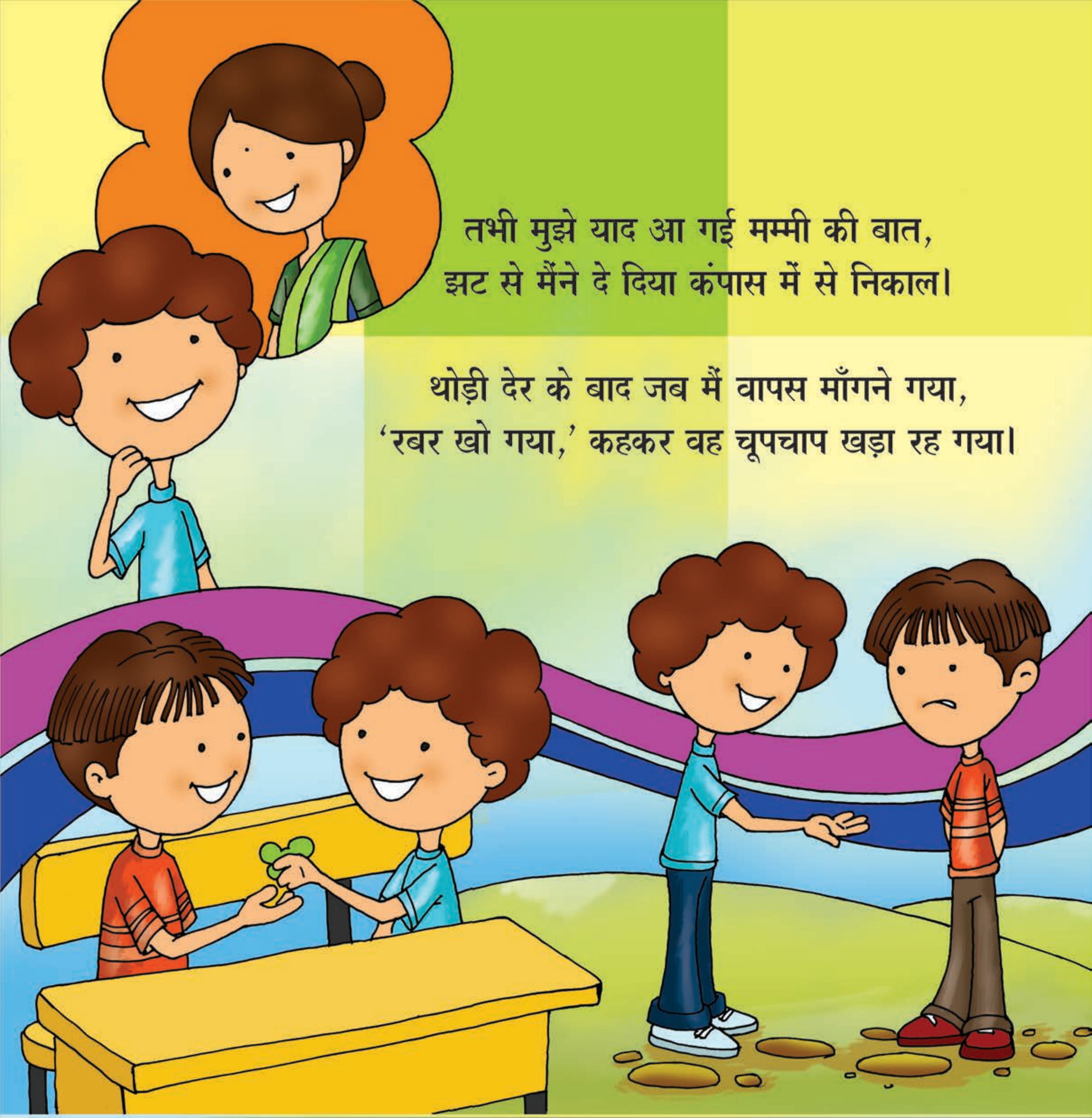

तभी मुझे याद आ गई मम्मी की बात,
झट से मैंने दे दिया कंपास में से निकाल।

थोड़ी देर के बाद जब मैं वापस माँगने गया,
'रबर खो गया,' कहकर वह चूपचाप खड़ा रह गया।

मुझे उस पर बहुत गुस्सा आया,
ऐसा-वैसा बोलकर उसे मार आया।

उसे काफी चोट लगी, वह रोने लगा,
मेरे से 'कट्टी' करके वह जाने लगा।

मैंने उसे मनाया और 'सोरी' कहा,
लेकिन वह नहीं माना, मैं सोचने लगा।

घर जाकर मैंने मम्मी से पूछा,
'मैं क्या करूँ? मुझसे ऐसा हुआ।'

मम्मी कहने लगीं, *'उसके अंदर भी*
भगवान बैठे हैं,
उन्हें याद करके प्रार्थना कर ले।'
कह दे, 'मेरी भूल हो गई,

माफ करो, दोबारा करूँगा नहीं।
ऐसा करने से भगवान तक प्रार्थना पहुँच जाएगी,
फिर चिंता करने की ज़रूरत नहीं रहेगी।'

तुरंत उसके अंदर बैठे हुए भगवान को,
प्रार्थना करके सो गया रात को।

दूसरे दिन स्कूल में मेरे पास आकर,
सामने से उसने मुझे बुलाया 'मुस्कुराकर'।

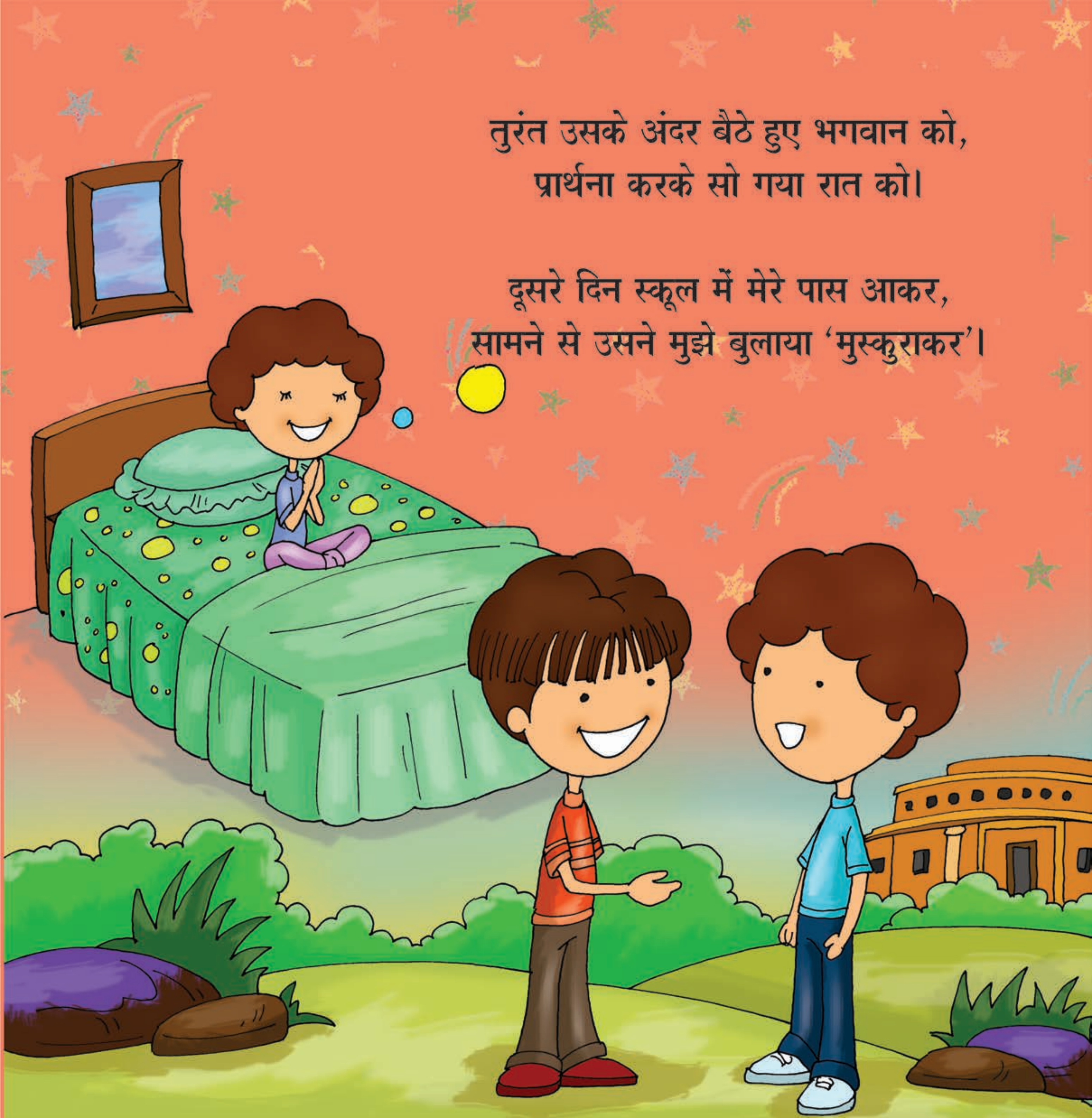

एकबार मम्मी के पास जाकर मैंने कहा,
‘मम्मी, मम्मी, टीनु के पेट में बहुत दर्द है।
डॉक्टर दवाई देते हैं,

उसकी मम्मी उसकी देखभाल करती है।
फिर भी वह चिल्लाता रहता कि
पेट में दर्द है, पेट में दर्द है।’

मम्मी ने कहा, 'फिर तूने क्या किया?'
मैंने कहा, 'मैं तो आ गया, मैं क्या करता?'
मम्मी ने कहा, 'तूने उसके सिर पर हाथ नहीं घुमाया?
ऐसा नहीं कहा कि रो मत, ठीक हो जाएगा।'

'नहीं,' मुझे लगा, 'इसमें मैं क्या कर सकता हूँ?'
मम्मी ने कहा, 'तू उसके लिए प्रार्थना कर सकता है।'

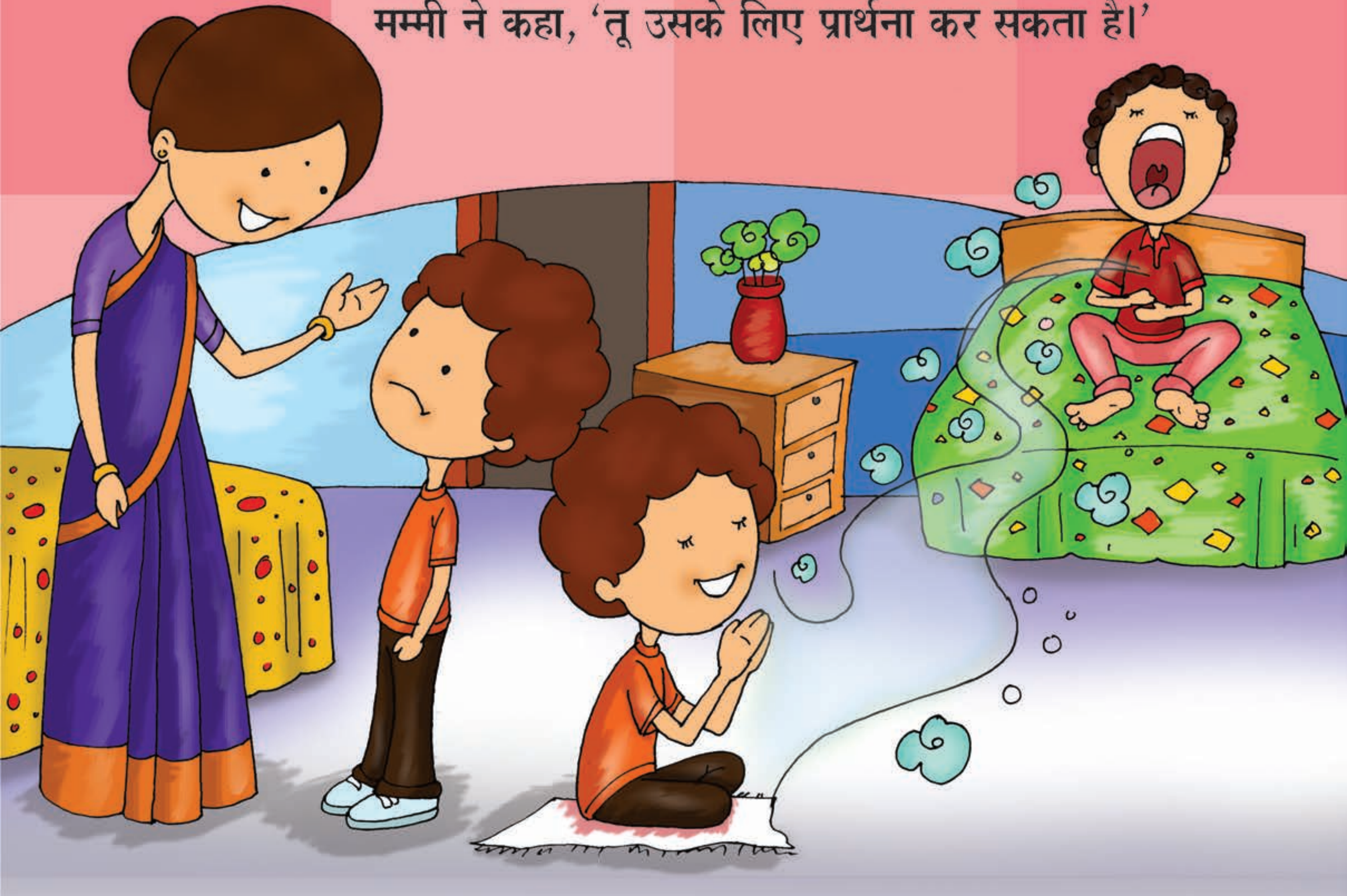

‘क्या हम औरों के लिए भी प्रार्थना कर सकते हैं?’
मम्मी से पूछा कि ‘कैसे कर सकते हैं?’
मम्मी ने कहा, ‘उसके अंदर बैठे हुए भगवान से कहो,
कि टीनु जल्दी ठीक हो जाए, ऐसी कृपा करो...

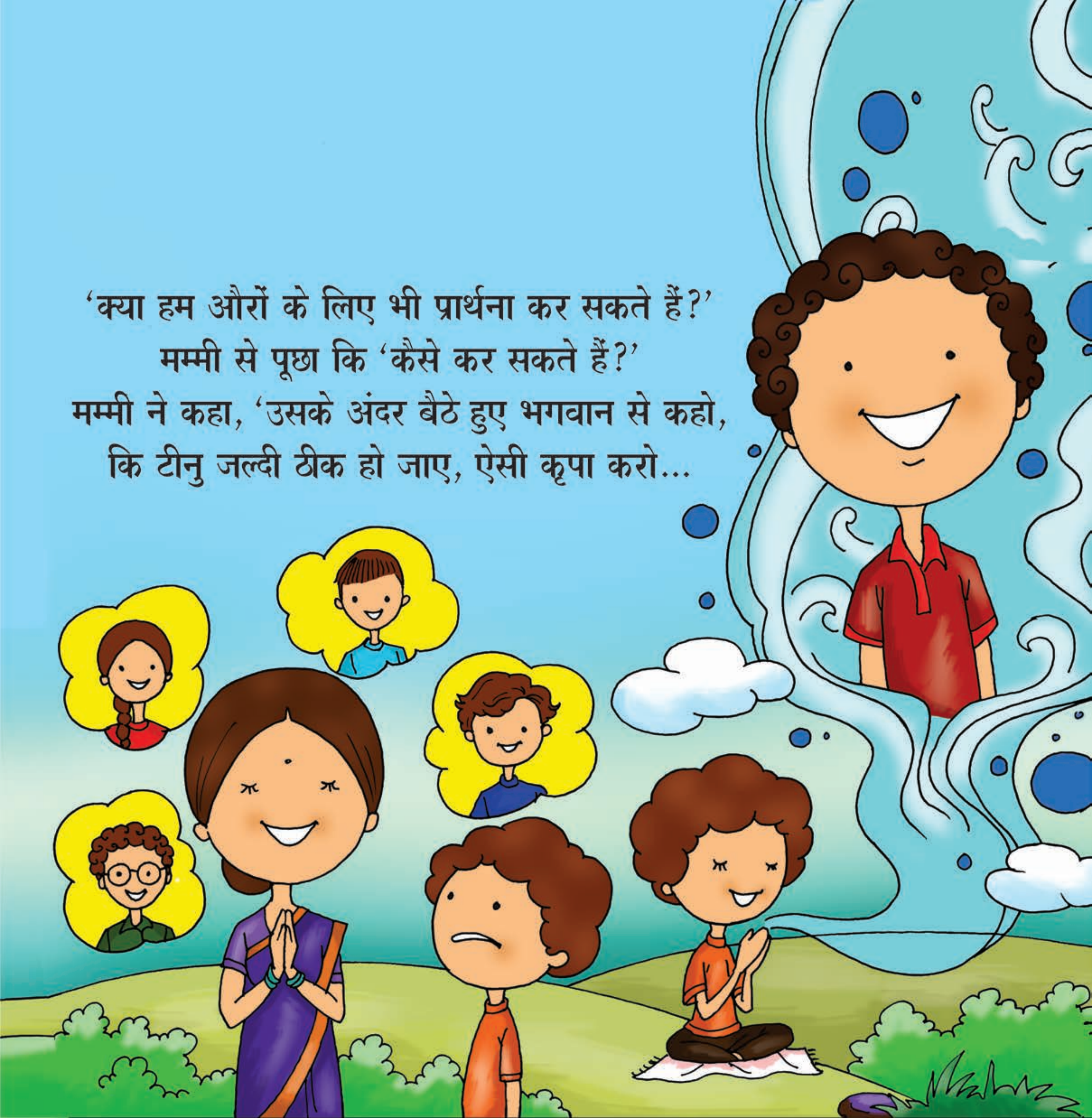

दर्द में शांति रख सके,
ऐसी उसे शक्ति मिले।
रोने के बजाय वह भी आपको याद करे,
ताकि जल्दी ठीक हो जाए।
ऐसे प्रार्थना करने से उसे शक्ति मिलेगी,
और वह ठीक हो जाएगा जल्द ही।'

मम्मी की बात मुझे पसंद आई,
और मेरी प्रार्थना शुरू हो गई।

शाम को मैं वापस उसके पास गया,
मुझे आश्चर्य लगा वह हँस रहा था।
आज मेरी समझ में आया, ऐसा भी कर सकते हैं,
प्रार्थना अपने लिए ही नहीं
बल्कि औरों के लिए भी कर सकते हैं।

पढ़ाई करना मुझे अच्छा नहीं लगता,
ए. बी. सी. डी. मुझे याद नहीं रहती।

एक दिन पूछा मैंने मैडम से,
'क्या भगवान याद शक्ति बढ़ा देंगे?'

मैडम ने कहा, 'हाँ, हाँ, जो माँगो वे देंगे,'
*प्रार्थना करना कि मैं जो भी पढ़ूँ वह
याद रहे।*

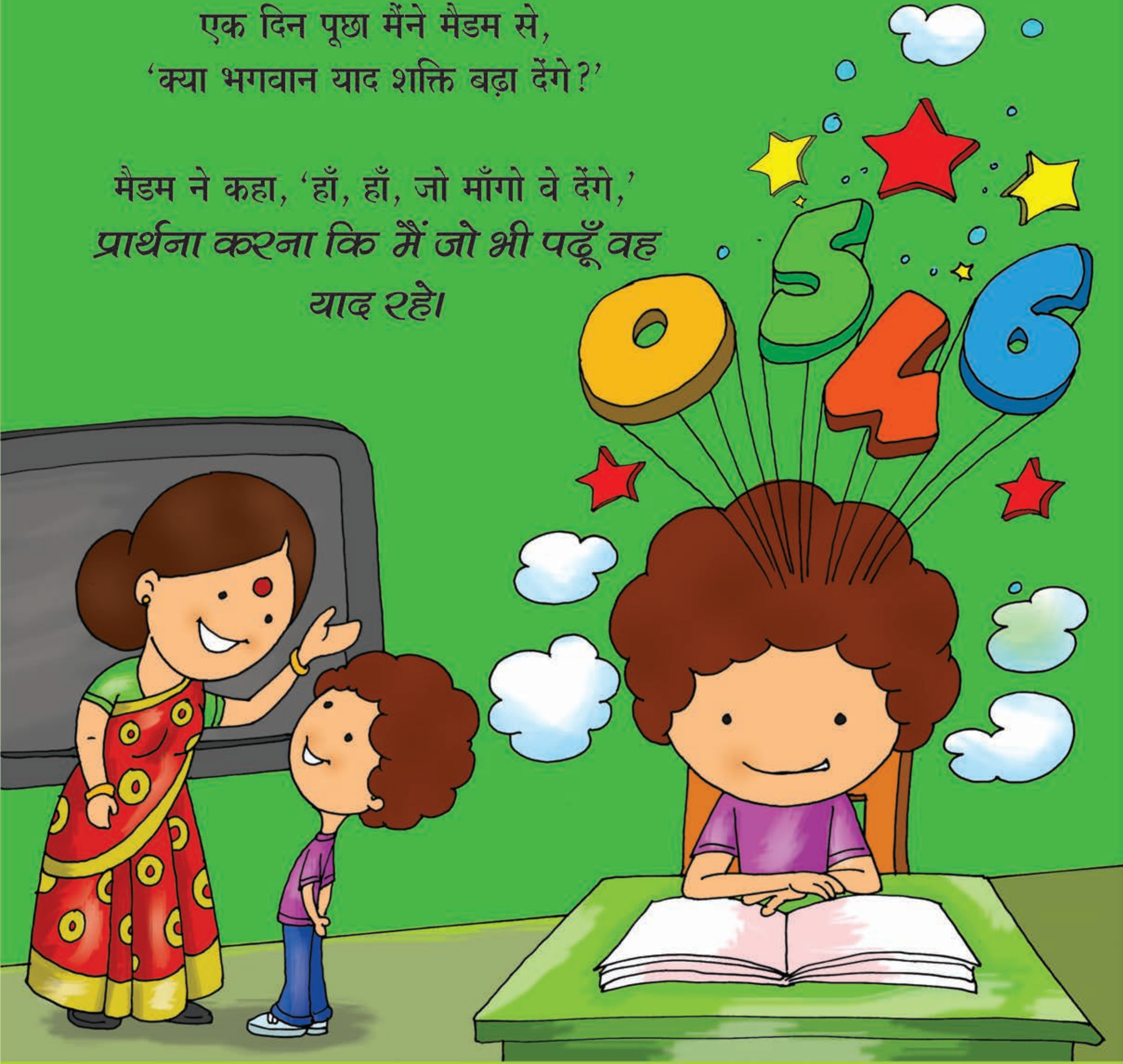

फिर तो रोज़ पढ़ने से पहले,
करता मैं प्रार्थना भूले बगैर।
याद शक्ति मेरी बढ़ने लगी,
प्रार्थना... तूने तो कमाल की...

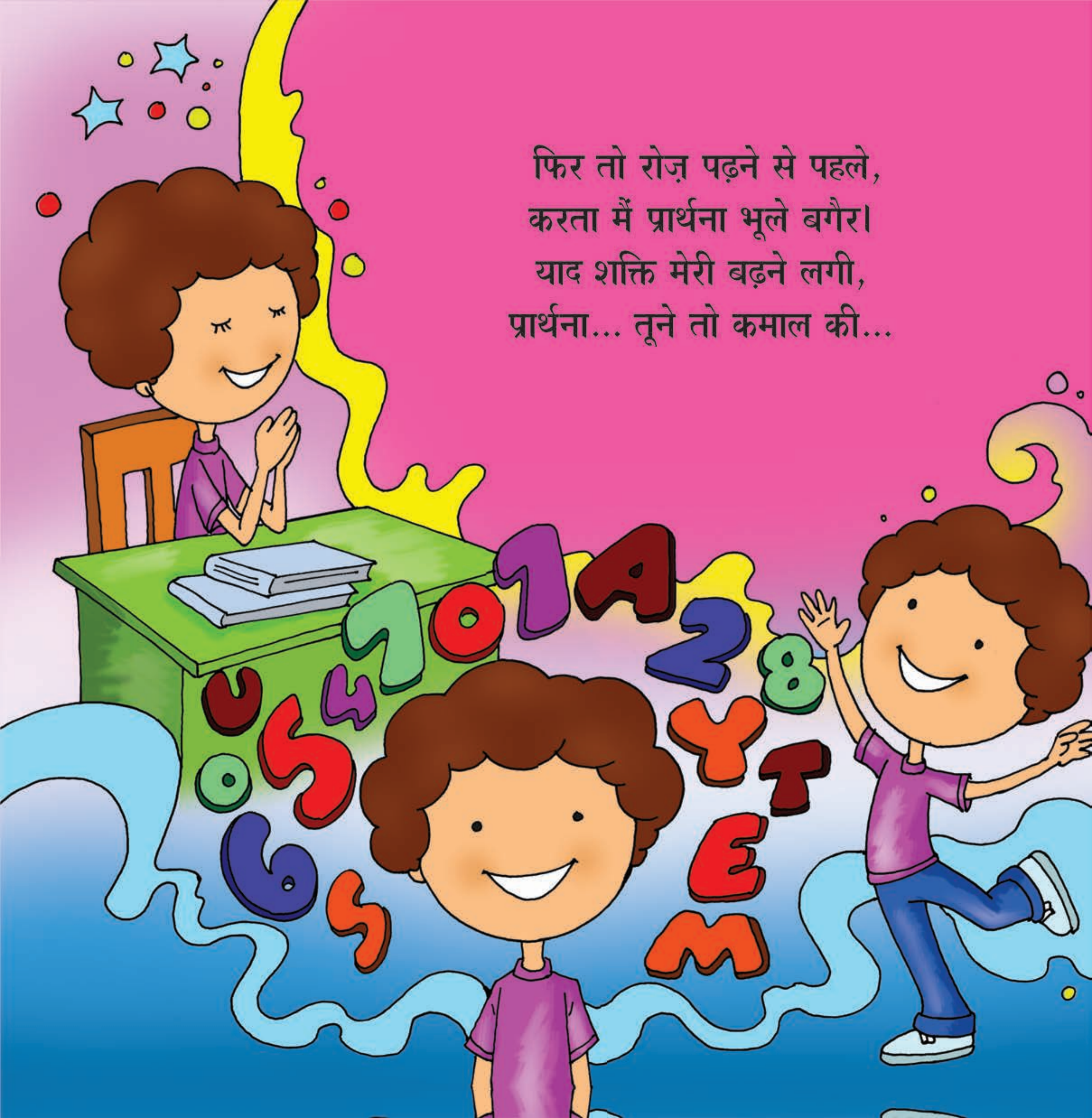

बोलो,
भगवान मेरे 'बेस्ट फ्रेन्ड' हैं,
अब तो आप मानोगे न?
अगर आपको भी बनाने हों तो
प्रार्थना शुरू कर दो न!!!

प्रार्थना

Telephone to God

ISBN 978-93-82128-90-8

9 789382 128908

Printed in India

₹ 45